जिन्ना न पाकिस्तान के न हिंदुस्तान के

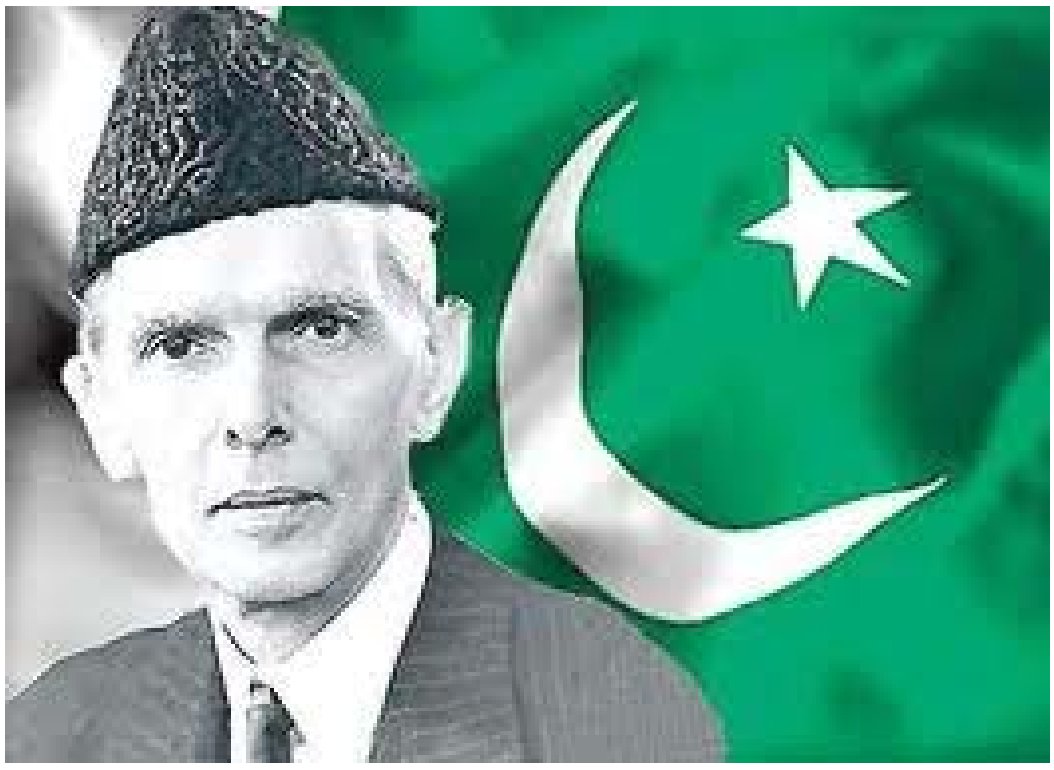

मोहम्मद अली जिन्ना भारतीय राजनीति के सबसे जटिल और रहस्यमयपूर्व व्यक्ति थे. उनके कई चेहरे थे. किसी समय वह हिंदु-मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थै. उन्हें हिंन्दु-मुस्लिम एकता का राजदूत कहा जाता था. वह मुल्ला-मौलवियों से दूर रहते थै. शराब और सूवर के मांस की सेंडविच से उन्हें परहेज नहीं था. फिर उन्होंने ऐसा पलटा खाया कि वह मुसलमानों को एक अलग राष्ट्र कहने लगे शेरवानी पहनने लगे, उर्दू में तकरीर करने का अभयास करने लगे. उन्होंने न केवल पाकिस्तान का नारा दिया, बल्कि उसके पहले गवर्नर जनरल बने .

जिन्ना ने अपनी पसंद की एक पारसी लड़की से विवाह किया. लेकिन उन्होंने अपनी पुत्री दीना को अपनी पसंद के एक पारसी युवक से विवाह करने की इजाजत नहीं दी. जिन्ना ने पाकिस्तान का निर्माण तो कि, लेकिन वह उसके निर्माण से खुश नहीं थे. पाकिस्तान में वह अकेले पड़ गये थे. उनका कोई वंशज पाकिस्तान नहीं गया. स्व्यं जिन्ना मुंबई लौटने को तड़पते रहे. पेश है जिन्ना के जीवन की कुछ अंतरंग झांकिया.

छू दिया गया तो वह टूट जाएगी

जिन्ना १९१६ में लोकप्रियता के शिखर पर थे, उन्होंने मोतीलाल नेहरू के साथ मिलकर लखनउ पैक्ट या स्वतंत्रता के पैक्ट का मसौदा तैयार किया था. उनका समय मोतीलाल नेहरू की राय में "जिन्ना एक महान राष्ट्रवादी और मुसलमनों को हिंदु-मुस्लिम एकता की राह पर ले जा रहे है"

लखनउ पैक्ट को अंतिम रूप देने के बाद जिन्ना अपने मुवक्किल सर दिनशा मानाकजी पेटिट के दार्जिलिंग स्थिम बंगले में छुट्टी मनाने चले गये. मानाकजी मुंबई के पारसियों के नेता, प्रमुख उघोगपति और सरकार के कृपापात्र थे. उनके पिता पहले भारतीय सर थै. मानाकजी को भी सरकार ने सर के खिलाब से सम्मानित किया था. सन् १९०१ में बड़े दिनशा की मृत्यु के बाद उनके पुत्र सर दिनशा मानोकजी पेटिट उनकी विशाल संपत्ति और परसी समुदाय के नेता पद से उत्तराधिकारी बने.

सर दिनशा की एकमात्र पुत्री रतनबाई का जन्म २० फरवरी १९०० को हुआ था. वह अद्भुत, आकर्षक और बुद्धिमान बालिका थी. प्रत्येक कला में पारंगत आयु बढने के साथ उसके सौन्दर्य में अभिवृद्धि हुई. वह परी समान लगती थी. अत्यधिक कोमल और मनोहारी. इतनी कोमल कि लगता था कि अगर उसे छू दिया गया, तो वह टूट जाएगी.

जिन्ना चालीस के : रती सोलह की

उस वर्ष गरमियों में छुट्टी मनाने रतन बाई भी दार्जिलिंग गयी. हिमाचल के हिमाच्छादित पर्वत शिखरों के सामने देवदार औरचीड़ के विशाल ावक्षों की छाया में और चारों और बगराये वसंत के फूलों की सुगंध में जिन्ना और रती मिले. जिन्ना ४० के थे और रती १६ की. जिन्ना रती के सौन्दर्य और बुद्धि से और रती जिन्ना के सुदर्शन व्यक्तित्व, पैने तर्को और बौद्धिकता से आकृष्ट हुई. दोनों दिनशा पेटिट के विशाल बंगले में रहते कब एक दूसरे के हो गये. पता भी नहीं चला.

सरोजनी नायडू और जिन्ना

जिन्ना का पहला विवाह कानून की पढाई के लिये इंगलैंड जाने के पहले सन् १८९२ में हुआ था. उस समय वह १६ वर्ष के और उनकी पत्नी एमी बाई १४ वर्ष की थी. जिन्ना के स्वदेश लौटने से पहले एमी बाई का निधन हो गया.

कवियत्री सरोजनी नायडू जिन्ना की प्रशंसक और अंतरंग मित्र थी. उसकी जिन्ना से पहले भेट कलकत्ता कांगे्रस के दौरान हुई थी. उन दिनों उदीयमान वकील और राजनीतिज्ञ रूप में सर्वत्र उनकी चर्चा थी. वह ओजस्वी देशप्रेम की भावना से अनुप्राणिता थे. सरोजनी नायडू उनके विलक्षण स्वरूप और दुलर्भ और जटिल मिजाज पर तत्काल मोहित हो गयी.

प्रेम धर्म में आसक्त जिन्ना

जिन्ना देश की प्रतिष्ठित नेता और चोटी के वकील थे. उनकी फीस १५०० रूपये रोज थी. वह और रती अलग-अलग धर्मो को मानते थे. लेकिन प्रेम धर्म की उंची दीवारों को गिरा देता है. उन्होंने रती के पिता सर दिनशा से एक सैद्धांतिक प्रश्न पूछा कि विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच विवाहों पर आपकी क्या राय है ? रती के पिता ने उत्तर दिया कि इससे राष्ट्रीय एकता की स्थापना में मदद मिलेगी और अंतत: सांप्रदायिक विरोध की समाप्ति होगी. सर दिनशा का उत्तर सुनने के बाद जिन्ना ने उनसे रती का हाथ मांगीा. जिन्ना की बात सुन सर दिनशा को जबरदस्त झटका लगा. उन्हें यह पतानहीं था कि उनके उत्तर से उन्हें ही घेरने का प्रयास किया जावेगा. उन्होंने इस प्रस्ताव पर विचार करने से इंकार कर दिया और इसे मूर्खतापूर्व और उट-पटांग कहा.

जिन्ना से न मिलने के अपने पिता के आदेश से रती के प्रेम में काई कमी नहीं आयी. बल्कि दोनों प्रेमियों का इरादा और पक्का हो गया. वे शांति से रती के बालिक होने का इंतजार करने लगे.

रती ने १८ वर्ष पूरे करते ही अपना घर छोड़ दिया. फिर उसने इस्लाम कबूल कर लिया. जिन्ना और रती शुक्रवार १९ अप्रैल १९१८ को विवाह सूत्र में बंध गये. रती के विवाह में उसके माता-पिता और कोई संबंधी शामिल नहीं हुए. उन्होंने उसे मरा मान लिया. नव दंपत्ति हनीमूल के लिए नैनीताल गये.

रती और जिन्ना का वैवाहिक जीवन लगभग एक दशक तक बढिया चला. इस बीच उन्होंने भारत में अनेक कस्थानों और विश्व के अनेक देशों की यात्रा की. वे कुछ समय तक इंगलैंड में भी रहे, जहां रती ने अपनी एकमात्र पुत्री दीना को जन्म दिया. फिर उनके प्रेम की उष्मा शांत होने लगी.

रती और दीना : एक सी गति

रती सुख-शांति के लिए रहस्यवाद की और मुडी. वह दिवंगत आत्माओं, पितृ पूजन और विचार अंतरण में रूचि लेने लगी.

रती २५ वर्ष की हो गी थी. दीना छह वर्षकी थी. जिन्ना की व्यवस्थता बढती जारही थी. दीना का अधिकांश कासमय स्कूल में और अपने मित्रों के साथ बितता था. रती कुत्ते-बिल्लियों के साथ अपना समय गुजारती थी. रती को लगा उसका विवाह विफल हो गया है और वह जिन्ना से अलग हो गयी.

रती ने बंबई के ताजमहल होटल में एक सूट किराये पर ले लिया. १० अप्रैल १९२८ को वह अपनी मां के साथ पेरिस को रवाना हुई. लगभग इसी समय जिन्ना भी इंग्लैंड के लिये रवाना हुए. पेरिस में रती गंभीर रूप से बीमार हो गयी. जब जिन्ना को, जो आयरलैंड में थे, इस बात का पताचला, वह फौरन पेरिस गये. वहां उन्होंने रती के इलाज का सर्वोतम व्यवस्था की. उती ठीक हो गयी, लेकिन दोनों के बीच की दूरी कम नहीं हुई. वह अपने पति के साथ रहने नहीं गयी, बल्कि अपनी मां के साथ स्वदेश लौट गयी.

ताजमहल होटल में अकेली रती

अगले वर्ष शुरू में रती फिर गंभीर रूप से बीमार हो गयी. वह ताजमहल होटल के अपने सूट में शैया पर पड़ी रहती थी. जिन्ना राज शाम को उनसे मिलने जाते थे. दोनों पुराने दिनों की तहत बातें करते. मित्रों को लगा उसके बीच की दूरी कम हो रही है .

जिन्ना को केन्द्रीय धारा सभा के अधिवेशन में भाग लेने दिल्ली जाना पड़ा. इस बीच रती की हालत और बिगड़ गयी. एक दिन जिन्ना को अपने ससुर दिनशा का फोन मिला कि रती के विवाह के बाद पहला कि रती गंभीर रूप से बीमार है. वह दूसरे दिन सुबह की गाड़ी से बंबई को रवाना हो गये. उनके बंबई पहुंचने से पहले २० फरवरी १९२९ को रती का निधन हो गया.

कब्रिस्तान में भावुक जिन्ना

बंबई पहुंचने पर जिन्ना को सीधे कब्रिस्तान ले जाया गया. जब रती के पार्थिव शरीर को कब्र में उतारने के बाद जिन्ना ने उस पर सबसे पहले मिट्टी डाली, तो वह बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगे. जिन्ना के सहायक मोहम्मद करीब चागला (बाद में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री) का कहना है कि मैंने केवल उस बार जिन्ना को मानवीय कमजोरियां प्रकट करते देखा.

दीना का विद्रोह : दीना वाडिया बनी

जिन्ना की एकमात्र पुत्री अपनी मां की तरह सुंदर और स्वतंत्र स्वभाव की थी. जब दीने ने एक पारसी से ईसाई हुए, नेविल वाडिया से विवाह करने का निश्चय किया, जिन्ना ने इस विवाह को रोने की पूरी कोशिश की, ठीक उसी तरह जैसे सर दिनशा मानोकजी ने रती का विवाह रोने की की थी.

जिन्ना ने अपनी सामान्य रोबदारी शैली में अपनी पुत्री से कहा कि भारत में लाखों मुसलमान लड़के हैं और तुम उनमें से किसी को चुन सकती हो लेकिन जिन्ना की लड़की दीना उत्तर में अपने पिता से कम नहीं थी. उसने जिन्ना से पूछा -पिताजी, भारत में लाखों मुसलमान लड़कियां थी. आपने उनमें से किसी के साथ विवाह क्यों नहीं किया ?

जिन्ना ने विवाह के बाद कभी भी अपनी पुत्री से बात नहीं की. पिता पुत्री में पत्र व्यवहार होता था, लेकिन जिन्ना दीना को सदैव श्रीमती वाडिया कहकर संबोधित करते थे. वे अपने मित्रों से कभी उनकी चर्चा नहीं करते थे. वह सदैव इस बात पर जोर देते थै कि उनके कोई पुत्री नहीं है.

दीना और नेविल वाडिया ने बंबई में अपनी गृहस्थी जमायी. उनके दो बच्चे हुए-एक पुत्र और एक पुत्री. इसके बाद उनका तलाक हो गया.

नेविल वाडिया अब बांबे डाइंग नाम से प्रसिद्ध उघोग समूह के अध्यक्ष थे. उन्होंने अपना कारोबार अपने पुत्र नुसली को सौंप दिया, जो अब वाडिया उघोग समूह के प्रमुख है. जिन्ना के पौत्र नुसली वाडिया के दो पुत्र है. नेविल की पुत्री अमेरीका में मैनहैटन में रहती थी. जिन्ना का कोई प्रत्यक्ष वंशज पाकिस्तान में नहीं रहता. दीना केवल एक बार जिन्ना के अंतिम संस्कार में भाग लेने के लिये पाकिस्तान गयी थी.

पाकिस्तान जाने के बाद भी जिन्ना का मन मुंबई और वहां स्थित अपने मकान के आसपास मंडराता रहता था. पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त प्रकाशसे उन्होंने कहा था कि मेरा मुंबई का मकान मेरे दिल का टुकड़ा है. मैं नहीं चाहता हूं कि उसमें कोई ऐसा गैरा आदमी रहे. उसे ठीक ढंग से रखा जावे. मैं एकदिन वही लौटना चाहता हूं.